eISBN: 978-81-686924-4-2

CHAPTER-38

षा विज्ञान का विऔपनिवेशीकरण: अवधारणाएँ, रूपरेखा और पद्धतियाँ

(Decolonising LINGUISTICS: Concepts, Frameworks and Methodologies)

Shubham Sharma
Research Scholar,
Hindi Department, Central University of Karnataka, Kalaburagi
25dhind009@cuk.ac.in
https://doi.org/10.66483/jsp.2026.001.ch38

प्रस्तावना:
भारतीय भाषा परिवार की अवधारणा भारत की भाषाई एकता को एक ही सभ्यतागत परिवार के रूप में देखने की पक्षधर है अथवा भारत की भाषाई एकता को एक भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो भारत की अनेकता में एकता को समझने का एक विऔपनिवेशिकृत प्रयास है। यह ढाँचा भारत की सभी भाषाओं को एक ही परिवार के रूप में देखता है, न कि पृथक और प्रतिद्वंदी भाषा समूह के रूप में। यह दृष्टिकोण औपनिवेशिक भाषाविज्ञान की व्यवस्था को चुनौती देता है और भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक एकता को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करता है।

बीज शब्द: *भारतीय भाषा परिवार*, NEP-2020, *विउपनिवेशवाद, सांस्कृतिक एकता, भारतीय भाषाएँ, भारतीय भाषाई परंपरा, औपनिवेशिक हस्तक्षेप।*

भारतीय भाषाओं को समझने के लिए यह समझना आवश्यक है कि औपनिवेशिक काल में भाषा-वैज्ञानिक किस प्रकार भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण करते थे। औपनिवेशिक काल (1757-1947) भारतीय भाषाओं के लिए एक संकटग्रस्त काल था। लगभग 200 वर्ष की अवधि के इस ब्रिटिश काल में भारतीय भाषाओं को योजबद्ध रूप से सीमांत किया गया, उसके सामाजिक और शैक्षणिक मूल्यों को नष्ट किया गया, और एक भाषाई पदानुक्रम स्थापित किया गया जो आज भी भारत में विद्यमान है। ब्रिटिश शासन ने भारतीय भाषाओं का गहन अध्ययन कर यह जल्द ही समझ लिया कि इस देश की भाषाएं मात्र संचार का माध्यम ही नहीं अपितु यहाँ की भाषाओं में इस देश की सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर भी विद्यमान है, प्रत्येक भाषा अपने अंदर सांस्कृतिक मूल्यों को समाविष्ट किए हुए है। इन सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का समवर्ती रूप इस देश की सभी भाषाओं में विद्यमान है, जो इस देश को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करते हैं। औपनिवेशिक शक्तियों के लिए इस देश की एकता सबसे बड़ी चुनौती थी इसलिए उन्होंने न केवल सामाजिक स्तर पर अपितु भाषिक स्तर पर भी विभाजन कर इस एकता को खंडित करने का प्रयास किया जिसमें कि वो दुर्भाग्यवश सफल भी रहे। औपनिवेशिक भाषावैज्ञानिकों ने भारतीय भाषा-परिवार को पृथक-पृथक भाषा परिवारों में विभाजित कर दिया, जिसके पीछे उनका प्रयास भारत की भाषिक एकता को विकृत करना था। उन्होंने भारतीय भाषाओं को आर्य-भाषा परिवार, द्रविड़-भाषा परिवार, तिब्बती-चीनी भाषा परिवार, आस्ट्रिक-भाषा परिवार जैसे अलग-अलग परिवारों में विभाजित कर दिया। इस वर्गीकरण के माध्यम से औपनिवेशिक शक्तियां भारत को विभाजित रखना चाहती थीं। उन्होंने योजनाबद्ध रूप से आर्य बनाम द्रविड़ का विभाजन कृत्रिम रूप से बड़ा किया जिससे भारतीय समाज में वैचारिक संघर्ष पैदा हो सके।

1 भारतीय भाषा परिवार

भारतीय भाषा-परिवार की अवधारणा यह मानती है कि सभी भाषाएँ चाहें वे आर्य-भाषाएं हों, द्रविड़ हों या अन्य कोई भाषाएँ हों सभी एक ही विशाल सभ्यतागत परिवार का ही हिस्सा हैं। "विश्व में कुल लगभग तीन हजार या उससे कुछ अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं की ध्वनियों, शब्दों, शब्द-रचना, रूप-रचना तथा वावय-रचना के तुलनात्मक अध्ययन से यह पता चलता है कि इन भाषाओं में काफ़ी कुछ बातें समान हैं। समानता इतनी अधिक है कि इसे केवल संयोग नहीं माना जा सकता । इसका एक ही कारण हो सकता है कि जो भाषाएँ अपनी भाषिक

विशेषताओं में समान हैं, वे मूलतः एक ही भाषा से निकली या विकसित हुई होंगी।"[1] प्रत्येक भाषा जो मानव समाज में बोली जाती है, अगर हम उसकी उत्पत्ति की खोज करें तो उसका संबंध कहीं-न-कहीं किसी मूल भाषा से निकलेगा, प्रत्येक भाषा किसी-न-किसी रूप में किसी अन्य भाषा से प्रभाव ग्रहण करती है और उसकी उत्पत्ति भी किसी मूल भाषा के प्रभाव के करण ही संभव होती है। एकाएक किसी का भाषा का निर्माण संभव नहीं है। "बात यह है कि प्रत्येक परिवार की विभिन्न भाषाओं का समय की प्रगति के साथ-साथ विकास हुआ है, किन्तु जब हम किसी एक परिवार के विकासक्रम का अध्ययन करते हुए अतीत अथवा प्राचीन युग की ओर बढ़ते हैं तो हमें एक ऐसी मूल भाषा मिलती है जिससे इस परिवार की सभी भाषाएँ उद्भूत हुई हैं। प्रत्येक परिवार की इन्हीं मूल भाषाओं को लेकर विभिन्न परिवारों की सृष्टि हुई है और एक परिवार की विभिन्न भाषाओं के पारस्परिक सम्बन्ध का भी रहस्य यही है। इस सूत्र के अनुसार अध्ययन करने से यह स्पष्ट विदित होता है कि संस्कृत, अवेस्ता की भाषा, प्राचीन फारसी, आर्मनीय, प्राचीन स्लाविक, प्राचीन ग्रीक, लैटिन, प्राचीन-जर्मेनिक तथा प्राचीन-केल्तिक आदि भाषाएँ एक विशेष वर्ग अथवा परिवार की हैं।"[2]

प्रसिद्ध अमेरिकी भाषावैज्ञानिक 'मरे ईमेनॉ' (Murray Barson Emeneau, 1904-2005) ने भारतीय भाषाओं के अध्ययन में क्रांतिकारी योगदान दिया। उनका सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान भारत को एक 'भाषाई-क्षेत्र' (linguistic area) के रूप में परिभाषित करना था। भाषाई-क्षेत्र का अर्थ एक ऐसे भौगोलिक-क्षेत्र से है जहाँ विभिन्न भाषा-परिवारों की भाषाएँ दीर्घ काल तक एक-दूसरे के साथ संपर्क में रहने के करण साझी भाषाई विशेषताएँ विकसित करती हैं। भारत वह भाषाई-क्षेत्र है जहाँ अनेक भाषाएँ एक लंबे समय तक एक-दूसरे के संपर्क में रहीं और एक दूसरे का प्रभाव ग्रहण करती रहीं। यह प्रभाव मात्र शाब्दिक आदान-प्रदान का नहीं था अपितु संरचनात्मक तत्वों का भी आदान-प्रदान था। "जिस मूलभाषा से भारोपीय परिवार की विविध भाषाओं की उत्पत्ति हुई है उसके नमूने आज उपलब्ध नहीं हैं। फिर भी इस परिवार की प्राचीन-भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् विद्वानों ने उस मूलभाषा की कल्पना अवश्य की है। इस कल्पना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अनुमानतः २७००-२६०० वर्ष, ईसा पूर्व, उस मूल भाषा से इस परिवार की प्राचीन-भाषाओं की उत्पत्ति हुई होगी और समय की प्रगति के साथ-साथ ये भाषाएँ योरप तथा एशिया के विभिन्न देशों में फैली होंगी।"[3] भारत की लगभग सभी भाषाओं पर संस्कृत का प्रभाव दिखाई देता है, संस्कृत मात्र एक भाषा नहीं थी अपितु वह भारतीय सभ्यता की एक सांस्कृतिक वाहक थी। जब संस्कृत साहित्य स्थानीय भाषाओं के संपर्क में आया तो उसने इन भाषाओं को समृद्ध किया। संस्कृत ने अन्य भाषाओं की व्याकरणिक संरचना को अक्षुण्ण रखते हुए, उन्हें दार्शनिक,वैज्ञानिक और सौंदर्यात्मक शब्दावली प्रदान की। भारत में आज 22 भाषाएँ संविधान की आठवी अनुसूची में शामिल हैं और सैकड़ों बोलियाँ हैं, प्रत्येक भाषा अपने साथ एक अलग साहित्य, दर्शन, लोक परंपरा और इतिहास लेकर आती है। परंतु ये सभी भाषाएँ एक साझी सभ्यतागत धरोहर की वाहक हैं।

2 भारतीय भाषाओं पर विदेशी आक्रान्ताओं का प्रभाव

भारत के इतिहास में जब विदेशी आक्रांताएँ आई पहले इस्लामिक शासन फिर यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियां- तो उन्होंने भारतीय भाषाओं को विभाजित करने का प्रयास किया। मध्यकाल में संस्कृत का स्थान फ़ारसी और अरबी ने ले लिया। उस समय किसी व्यक्ति की विद्वत्ता इस बात पर निर्भर होती थी कि उस व्यक्ति को फ़ारसी का ज्ञान है या नहीं लोकप्रचलित कहावत 'हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े-लिखे को फ़ारसी क्या?' इस बात की पुष्टि करती है। उस समय फ़ारसी पढ़ने-लिखने वाले को ही वास्तव में पढ़ा-लिखा माना जाता था बाकियों को अनपढ़ ही समझा जाता था। मुग़लकाल में फ़ारसी का प्रभाव इतना अधिक था कि उस समय अकबर को भी फ़ारसी न आने के करण अनपढ़ ही समझा जाता था, अकबर के बारे में तो प्रसिद्ध भी है कि वह पढ़ना-लिखना नहीं जानता था हालाँकि सच यह है कि वास्तव में वो फ़ारसी पढ़ना-लिखना नहीं जानता था पर हिन्दी भाषा का ज्ञान उसको था। रामविलास शर्मा अपनी पुस्तक 'भाषा और समाज' में अकबर के हिन्दी ज्ञान के बारे में बताते हैं- "उसके बारे में प्रसिद्ध है कि वह अपढ़ था। संभवतः इस प्रवाद का कारण यह था कि वह फारसी न जानता था। लेकिन हिन्दी तो उसने बाकायदा पढ़ी थी। जहांगीर ने

[1] तिवारी भोलानाथ, हिन्दी भाषा का इतिहास : वाणी प्रकाशन, सं.1996, पृ.9
[2] तिवारी उदयनारायण, हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास : लोकभारती प्रकाशन, सं.2019, पृ.1
[3] उप.पृ.5-6

लिखा था कि लाल कलावंत बचपन से ही अकबर की सेवा में रहा था और उसने बादशाह को हिन्दी भाषा का राई-रती ज्ञान करा दिया था।"[4] फ़ारसी के इसी प्रभुत्व के कारण मध्यकाल में इस्लामिक शासन में फ़ारसी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ, वह उस काल की आधिकारिक भाषा बन गई जिसका प्रभाव आधुनिक काल तक प्रशासनिक भाषा पर रहा। इसके बाद जब अंग्रेज़ भारत में आए तब उन्होंने भारत की भाषिक व्यवस्था और शिक्षा प्रणाली का बहुत ह्रास किया। अंग्रेजों ने भारतीय लोगों में अलगाव पैदा करने के लिए भाषा के आधार पर उनका विभाजन किया और भाषा को धार्मिक पहचान देकर हिन्दूयों और मुस्लिमों में वैमनस्य का भाव पैदा कर दिया। इसी वैमनस्य के भाव के कारण हिन्दी हिंदुओं की और उर्दू मुसलमानों की भाषा मानी जाने लगी। अंग्रेजों के आने से पूर्व यह मात्र भाषाओं के रूप में ही समाज में विद्यमान थीं जिसका प्रयोग दोनों समुदाय के लोग किया करते थे। "अंग्रेजी राज कायम होने से पहले दरबारों से सम्बंधित कवियों में भी क़ौमी अलगाव का विचार न पैदा हुआ था। यह विचार पैदा ही नहीं हो सकता था क्योंकि फारसी पढ़ने वालों में हिन्दू-मुसलमान दोनों थे। फारसी मुसलमानों की मातृभाषा है- यह गलतफहमी उस समय मुमकिन न थी। उर्दू लिखने वालों में हिन्दू-मुसलमान दोनों थे।"[5] अंग्रेजों के आने के बाद ही भाषा के स्तर पर यह धार्मिक भेदभाव पैदा हुआ। अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं को मात्र संचार का माध्यम नहीं बनाया, बल्कि इनको राजनीतिक नियंत्रण और समुदायों को बाँटने का हथियार बनाया।

3 लिंगग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया और मैकॉले का ज्ञापन

जॉर्ज ग्रियर्सन के नेतृत्व में 1894-1928 के बीच किया गया भारतीय भाषाई सर्वेक्षण (Linguistic Survey of India) जिसमें 364 से अधिक भारतीय भाषाओं और बोलियों का विशाल वर्गीकरण किया गया। इस सर्वेक्षण का मुख्य लक्ष्य भारतीय भाषाओं का वैज्ञानिक तौर पर अध्ययन करना नहीं था अपितु इस सर्वेक्षण के माध्यम से भाषाओं को क्षेत्रीय और धार्मिक सीमाओं में बाँधने का प्रयास किया, जिससे भविष्य में भाषा आंदोलन को बढ़ावा मिल सके। जॉर्ज ग्रियर्सन ने इस सर्वेक्षण में भारतीय राष्ट्रीयता के को संस्करणों को प्रस्तुत किया- एक धर्म आधारित और दूसरा भाषा आधारित। इस सर्वेक्षण के माध्यम से क्षेत्रीय भाषाओं की मान्यताओं, उनके सांस्कृतिक और राजनीतिक महत्त्व को भी दर्शाया गया। इन समस्त जानकारियों के आधार पर ही अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं का विभाजन किया और इस सर्वेक्षण को भारतीय भाषिक एकता के विरुद्ध एक हथियार के रूप में प्रतोग किया। भाषाविद जावेद मजीद अपने एक लेख में इस ओर संकेत करते है -"*The Survey was and continues to be used by language activists in the subcontinent to bolster claims for the recognition, rights, and entitlements of language based identities, and hence it has been 'weaponised' in the political arena.*"[6] ऐसे सर्वेक्षण का उपयोग भाषा-आधारित पहचानों के लिए किया जाता है, जिससे राजनीतिक क्षेत्र में यह एक हथियार का काम करते हैं। अंग्रेजों ने भारत की न सिर्फ़ भाषा व्यवस्था बल्कि शिक्षा व्यवस्था को भी विकृत किया। मैकॉले ने 2 फरवरी,1835 को भारतीय शिक्षा प्रणाली पर ज्ञापन प्रस्तुत कर उसके विनाश का कार्य किया। उसने अपने इस ज्ञापन में तर्क देते हुए कहा कि '*Indian learning was inferior to European learning*' भारतीय शिक्षा प्राणली यूरोपीय शिक्षा प्रणाली की तुलना में निम्न है। मैकॉले की नीति के कार्यान्वयन के पश्चात गुरुकुलों का सरकारी वित्तपोषण समाप्त कर दिया गया और संस्कृत,हिन्दी,तमिल आदि भाषाओं में शिक्षा को अप्रासंगिक घोषित कर दिया गया। महात्मा गांधी ने भारत की शिक्षा प्रणाली के बारे में कहा था कि '*भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली एक सुंदर वृक्ष थी, जिसे उखाड़कर नष्ट कर दिया गया*'। मैकॉले की इस नीति के बाद अंग्रेजी का प्रभाव भारत में तेज़ी से बढ़ा और भारत की मौलिक भाषाओं का पतन शुरू हो गया। **थॉमस बेबिंगटन मैकॉले** ने अपने प्रसिद्ध ज्ञापन में भारतीय साहित्य को "निम्नकोटि" का घोषित

[4] शर्मा रामविलास, भाषा और समाज : राजकमल प्रकाशन, सं.2002, पृ.288
[5] उप.पृ.311
[6] https://www.tandfonline.com/doi/epdf/10.1080/17597536.2022.2117506?src=getftr&utm_source=scopus&getft_integrator=scopus

किया और अंग्रेजी को सर्वोच्च माना। उसका लक्ष्य था "भारतीय रक्त और रंग में भारतीय, किंतु अंग्रेजी स्वभाव, विचार, नैतिकता और बुद्धि वाले" मध्यस्थ वर्ग को तैयार करना। इसके परिणामस्वरूप:

- **संस्कृत को हाशिए पर धकेला गया**: संस्कृत गुरुकुलों को वित्तीय सहायता बंद कर दी गई।
- **अंग्रेजी शिक्षा अधिनियम (1835)**: सरकारी शिक्षा में केवल अंग्रेजी को मान्यता दी गई।
- **भारतीय ज्ञान का अवमूल्यन**: यूरोपीय ज्ञान को सर्वोच्च माना गया, जबकि भारतीय ज्ञान परंपराओं को "पिछड़ा" माना गया।

मैकॉले का निर्देश था 'ऐसे व्यक्तियों का एक वर्ग तैयार करो जो रक्त और रंग में भारतीय, पर स्वाद, राय, नैतिकता और बुद्धि में अंग्रेजी हों' जिसमें वह सफल हुआ। अंग्रेजों की इस मानसिक गुलामी के शिकार आज भी तमाम लोग हैं। औपनिवेशिक शासन में भारत की भाषा-व्यवस्था में अनेकों बदलाव हुए जिसके कारण भारत की प्राचीन भाषाओं जैसे संस्कृत, तमिल, तेलुगु आदि का प्रभुत्व कम हुआ और अंग्रेजी ने इनकी जगह ले ली। लोगों ने अंग्रेजी में उपलब्ध ज्ञान को ही प्रामाणिक माना एवं उसकी का अध्ययन किया। इन विदेशी आक्रान्ताओं के हस्तक्षेप के करण ही भारत की स्वतंत्र भाषा के विकास की प्रक्रिया बाधित हुई।

4 भारतीय भाषाओं और नई शिक्षा प्रणाली का अंतःसंबंध

विऔनिवेशीकृत भारतीय भाषा परिवार और भारतीय भाषाओं के संयोजन में भारत की नई शिक्षा प्रणाली एक क्रांतिकारी कदम है। इस नई शिक्षा प्रणाली में प्राथमिक स्तर की शिक्षा मातृभाषा में देने का प्रावधान है। UNESCO की रिसर्च भी यह सिद्ध करती है कि जब बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है, तो उसके सीखने की क्षमता बेहतर होती है। मातृभाषा में शिक्षा भारतीय शिक्षा व्यवस्था के प्रति न्याय है, क्योंकि औपनिवेशिक काल में अंग्रेज़ी को भारतीयों पर थोपा गया। भारतीय शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) एक ऐतिहासिक पहल है, जो भारत की भाषाई विविधता को मान्यता देते हुए बहुभाषिक शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। यह नीति शिक्षा को भाषा के माध्यम से एक सामाजिक और सांस्कृतिक आन्दोलन में परिवर्तित करने का प्रयास करती है। मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना केवल एक शैक्षणिक रणनीति नहीं है, बल्कि यह समावेशी शिक्षा और सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति में तीन-भाषा सूत्र (Three Language Formula) को अपनाया गया है, जिसके अंतर्गत छात्रों को तीन भाषाएँ सीखने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस योजना में कम से कम दो भारतीय भाषाओं को शामिल किया जाता है, जिसमें विधार्थी की मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा प्रमुख स्थान पर रहती है। साथ ही, हिंदी और अंग्रेजी जैसी भाषाओं को भी उचित महत्व दिया जाता है, परंतु यह सुनिश्चित किया जाता है कि किसी भाषा को किसी पर बलपूर्वक थोपा न जाए।

NEP 2020 की दृष्टि में, बहुभाषिकता का अर्थ न केवल अधिक भाषाएँ सीखना है, बल्कि संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देना और सांस्कृतिक विविधता के प्रति जागरूकता पैदा करना भी है। जब छात्रों को उनकी अपनी भाषा में शिक्षा दी जाती है, तो वे अपनी संस्कृति के साथ एक गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं, जिससे उनमें अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति गर्व की भावना विकसित होती है। अनेकों शोध के माध्यम से यह प्रमाणित होता है कि बच्चे अपनी मातृभाषा के माध्यम से जो शिक्षा प्राप्त करते है उसको वह अधिक तेजी और गहराई से सीखते हैं। जब बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है, तो वे न केवल अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं, बल्कि उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने से छात्रों में समस्या-समाधान की क्षमता, आलोचनात्मक चिंतन और रचनात्मकता में वृद्धि होती है। NEP-2020 में मातृभाषिक शिक्षा और बहुभाषिक शिक्षा को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। सबसे पहले, शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पुनर्गठित किया जा रहा है ताकि वे विभिन्न भाषाओं में शैक्षणिक योग्यता हासिल कर सकें। राज्यों में मातृभाषा में पाठ्य सामग्री तैयार करने के लिए मानक पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं। दूसरा, तकनीकी साधनों का उपयोग करके विभिन्न भाषाओं में शिक्षण संसाधन विकसित किए जा रहे हैं। NEP-2020 की मातृभाषिक शिक्षा नीति समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए विशेष रूप से लाभकारी है। जब छात्रों

को उनकी अपनी भाषा में पढ़ाया जाता है, तो भाषा की बाधा कम हो जाती है, और वे शिक्षा ग्रहण करने में अधिक सक्षम होते हैं। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से छात्रों को विभिन्न भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है। तीसरा, माता-पिता और समुदाय को शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल किया जा रहा है, क्योंकि वे बच्चों के प्रथम भाषा सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हालाँकि NEP 2020 की मातृभाषा-आधारित और बहुभाषिक शिक्षा की दृष्टि अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, लेकिन इसके कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं। पहली प्रमुख चुनौती शिक्षकों की कमी है। भारत की भाषाई विविधता को देखते हुए, सभी भाषाओं में प्रशिक्षित योग्य शिक्षकों की तलाश करना एक कठिन कार्य है। दूसरी चुनौती शैक्षणिक सामग्री का निर्माण है। सभी भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण और मानकीकृत पाठ्य सामग्री तैयार करना एक महंगा और समय-साध्य कार्य है। तीसरी चुनौती सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिरोध है। कुछ क्षेत्रों में माना जाता है कि अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा अधिक प्रतिष्ठित है, जिससे मातृभाषा में शिक्षा के प्रति संदेह की भावना बनी रहती है। चौथी चुनौती नीति की असंगति है। विभिन्न राज्यों में नीति के कार्यान्वयन में भिन्नता है, जिससे एक समान मानक बनाए रखना मुश्किल है, परंतु इस दिशा में प्रयास अवश्य किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मातृभाषिक और बहुभाषिक शिक्षा के माध्यम से भारतीय शिक्षा व्यवस्था को पुनर्गठित करने का एक महत्वाकांक्षी प्रयास है। यह नीति न केवल विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों को भी संरक्षित करती है और समाज के सभी वर्गों का समावेश करती है। हालाँकि इसके कार्यान्वयन में चुनौतियाँ हैं, परंतु सही रणनीति, पर्याप्त संसाधन और सभी सहयोगियों की प्रतिबद्धता के साथ, यह नीति भारत में एक समानतापूर्ण, समावेशी, सांस्कृतिक और प्रभावी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकती है। यदि इसे सावधानीपूर्वक और प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो NEP 2020 न केवल भारत के लिए, बल्कि विश्वभर की शिक्षा प्रणालियों के लिए एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

5 निष्कर्ष

भारतीय भाषा परिवार की अवधारणा औपनिवेशिक विरासत के विरुद्ध एक विद्रोह है। यह भारत को अपनी भाषाओं के माध्यम से अपनी पहचान खोजने के लिए कहती है। भारत 22 अनुसूचित भाषाओं और सैकड़ों बोलियों का देश है। ये सभी भाषाएं एक-दूसरे के साथ सहस्राब्दियों प्रभाव ग्रहण करती आई हैं। यह अंतःक्रिया ही भारत की अनेकता को एकता में बांधती है। जब भारत का एक बच्चा अपनी मातृभाषा में सोच सके, पढ़ सके, परीक्षा दे सके और काम कर सके, तभी असली 'सशक्त भारत' का निर्माण हो सकेगा। यह केवल एक भाषाई प्रश्न नहीं है, यह न्याय, समानता और आत्मनिर्भरता का प्रश्न है। भारतीय भाषा परिवार का यह विचार केवल एक शैक्षणिक अवधारणा नहीं है। यह भारत के भविष्य का निर्माण करने का एक तरीका है- एक ऐसा भारत जो अपनी भाषाओं से प्रेम करता है, उन्हें सम्मान देता है, और उन्हें अपनी सांस्कृतिक शक्ति के रूप में देखता है। यह एक नए युग की शुरुआत है- 'भाषाई विविधता का युग' जहाँ हर भाषा बराबर का सम्मान पाती है, और सभी भाषाएँ मिलकर भारतीय सभ्यता को समृद्ध करती हैं।

YOUR DISSERTATION DESERVES RECOGNITION, NOT A PLACE IN A STOREROOM

Publish Your Dissertation as a Book through the Emerging Scholars Series

Transform your thesis or dissertation into a professionally published scholarly work, boosting its academic visibility and impact.

Benefits

📚 ISBN Registration*
🆔 Crossref DOI Assignment
🟢 ORCID Integration
🎓 Google Scholar Discoverability
📈 Enhanced Citation Opportunities
🌍 Wider Academic Reach and Recognition
🔒 Long-Term Preservation and Accessibility

Publication Options

Jnanasetu Repository	Jnanasetu Repository Publication with an ISBN
✓ Crossref DOI Assignment ✓ Online Archiving and Preservation ✓ Academic Visibility ✓ Citations	✓ ISBN Registration ✓ Crossref DOI Assignment ✓ Professional Book Publication ✓ Global Accessibility ✓ Academic Visibility ✓ Citations

Looking to Publish Research Articles?

Researchers and scholars may also submit manuscripts to **Jnanasetu Journals** for quality-focused scholarly publication.

✓ Peer-Reviewed Journals
✓ DOI Assignment
✓ Open Access Publishing
✓ Academic Visibility
✓ Timely Editorial Processing

We Also Publish

📖 Edited Books
📚 Scholarly Monographs
📝 Conference Proceedings
🔬 Academic Journals

For more details:

Press	jnanasetupress.com	support@jnanasetupress.com
Repository	jnanaseturepository.com	editor@jnanaseturepository.com
Journals	jnanasetujournals.com	editor@jnanasetujournals.com